“श्री गुरु गोविंदसिंघजी के दरबारी कवियों के साहित्य मे मानवतावादी दर्शन : एक अध्ययन”

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

मानव्य विद्या संकाय के अंतर्गत पीएच. डी. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध रूपरेखा

शोधछात्रा

रीनाकौर सुजानसिंघ कामठेकर

एम.ए. (हिंदी) बी.एड.एम.एड.

शोध निर्देशक

डॉ.भगवान नारायण जाधव

प्रोफेसर

स्नातकोत्तर हिंदी विभाग एवं अनुसंधान केद्र, पीपल्स कॉलेज, नांदेड

दिसम्बर - २०२४

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शिर्षक	पृष्ट क्र.
1.	प्रथम अध्याय : मानवतावादी दर्शन : सामान्य परिचय	5
2.	द्वितीय अध्याय : श्री गुरुगोविंदसिंघजी के दरबारी कवि	6
3.	तृतीय अध्याय : शिरोमणी दरबारी कवियों के साहित्य में मानवतावादी दर्शन	16
4.	चतुर्थ-अध्याय : अन्य दरबारी कवियों साहित्य में मानवतावादी दर्शन	17
5.	पंचम अध्याय : भाषा की दृष्टि से कवियों का अध्ययन	17
6.	षष्टम अध्याय : उपसंहार एवं निष्कर्ष	18

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबारी कवियों के साहित्य में मानवतावादी दर्शन : एक अध्ययन

प्रस्तावना :-

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी, सिखों के दसवें और आखिरी देहधारीगुरु थे । उनका जन्म सन 22 दिसंबर 1666 को पटना में हुआ था । वह एक महान योद्धा, दार्शनिक कवि, लेखक और संगीत के पारखी थे । श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने कई योगदान दिए । जैसे - इसवी सन 1699 में खालसा पंथ की स्थापना की । उन्होंने गुरु ग्रंथ साहिब का संपादन पूरा किया तथा उसे गुरु का दर्जा दिया । उन्होंने आस्था के पांच लेख पेश किए । उन्होंने कई ग्रंथ लिखे जिनमें 'चंडीदीवार, जाप साहिब खालसा महिमा, अकालउस्त, विचित्र नाटक और जफरनामा शामिल है ।' वे बलिदानी परंपरा में अद्‌वितीय होने के साथ-साथ गुरु गोविंद सिंह एक महान लेखक, मौलिक चिंतक तथा संस्कृत सहित कई भाषाओं के ज्ञाता भी थे । उन्होंने स्वयं अनेक काव्यों की रचना की । वे विद्‌वानों की संरक्षक थे । वे साहित्य मर्मज्ञ की अद्‌वितीय संगम थे । वे भक्ति तथा शक्ति के उपासक, प्रेरक थे । इसलिए उन्हें संत सिपाही भी कहा गया है । श्री गुरु गोविंदसिंघजी के प्रभाव से उनके दरबार में रहने वाले शिष्यो ने भी रचनाओं का निर्माण किया जिनको दरबारी कवि कहा जाता है । उन्होने जिन रचनाओं का निर्माण किया है उसका अध्ययन इस अनुसंधान में करना है ।

विषय चयन की प्रेरणा :-

दसवे गुरु, गुरु गोविंद सिंह जी एक प्रभावी हस्ती थे । वह वीर योद्धा, शूरवीर, कर्मयोगी, दुष्ट दमन थे । ऐसे कुशल व्यक्तित्व के अलावा आप में और बहुत सारे गुण संपन्न थे । वह सिरमौर उच्च दर्जे के कवि थे । आपको विविध विद्या में महारत हासिल थी । आपकोसाहित्य से बहुत लगाव था । इस कारण अपने स्वयं ही बहुत बड़े साहित्य के रचनाकार बने साथही साहित्य सृजन करने वाले गुणवान सज्जनों से भी अनेक साहित्य सृजन करवाया । आपने इन साहित्यिक कवियों की कदर की । देश - विदेश से अनेक विद्वान कवियों को अपने दरबार में आमंत्रित किया । इन कवियों ने गुरु गोविंद सिंह जी के दरबार में सम्मिलित होकर माँ शारदा की शोभा बढ़ाई । इन कवियों की गिनती 52 प्रसिद्ध है । इन्हें गुरु गोविंद सिंह जी के दरबारी रतन भी कहा जाता है । मैं इस विषय में इन दरबारी कवियों के साहित्य रचना, काव्य शैली तथा जीवनी ऐसे कई पहेलियां पर अपना खोज अध्ययन करना चाहती हूं । उनके साहित्य में विविध पहलूओं का सृजन हुआ है उनमे मानवतावादी दर्शन भी विस्तृत रुप में पाया जा सकता है, इसलिए मै प्रस्तुत विषय पर अनुसंधान करना चाहती हूँ ।

विषय का महत्व :-

गुरु गोविंद सिंह जी ने अपने पूर्वज 9 गुरु साहिबान की वाणियों का संकलन कर गुरु ग्रंथ साहिब की सम्पादना किया । अपने दरबार में समकालीन विविध भाषा के ज्ञाता कवियों को शामिल किया । गुरु साहब

अपने दरबार में रोजाना कवि दरबार रखते थे । जिसमें इन कवियों द्वारा रचित काव्य रचना को कलम बंद किया जाता था, यह काव्य रचना समकालीन समाज प्रेरक तथा भविष्य में लोकहित तथा मानवतावादी रहे हैं । इन दरबारी कवियों की दृष्टि भी व्यापक एवं सजग थी । उन्होने तत्कालीन काल की समस्याओं के साथ मानवतावादी विचार भी व्यक्त किए है । उनकी रचनाये समाज का लोकहित, लोककल्याण होने से इस विषय को हिंदी पाठको के सम्मुख लाना आवश्यक है ।

अनुसंधान का उद्देश्य :-

श्री गुरु गोविंद सिंह जी ने श्री आनंदपुर साहिब पंजाब में मानवी एकता, सामाजिक सुधारणा तथा अज्ञान के अंधकार को दूर करके उस समय के निर्बल समाज में शूरता तथा बौद्धिक गुनो की ज्योत जगायी, यह कार्य भारतीय इतिहास में मील का पत्थर साबित हुआ, आप स्वयं एक धार्मिक व सैनिक नेता होने के बावजूद साहित्यिक क्षेत्र में परिपूर्ण थे । जो कि मेरी प्रेरणा का स्रोत है । इसके अलावा अपने अपने समकालीन साहित्यकार, कवियों, गद्यकर, संगीत उपासकों, तथा शूरवीर नायकों की सरपरस्ती की यह भी मेरे लिए प्रेरणादाई कार्य रहा है । आपके समकालीन इतिहास के खोज करने पर मुझे यह संकेत प्राप्त हुई है कि गुरु गोविंद सिंह जी ने 52 कवि तथा कवियों द्वारा रचित रचना को कलम बंद लिखने के लिए 36 लेखक अपने दरबार में स्थापित किए हुए थे । मेरे अनुसंधान

का उद्देश्य इन 52 कवियों की जीवनी तथा उनके रचित साहित्य द्वारा मानवतावादी सामग्री को पाठकों के आगे विशेष रूप से प्रस्तुत करना है ।

पूर्ववर्ती शोध कार्य :-

मेरे अध्ययन के अनुसार श्री गुरु गोविंद सिंह जी के दरबारी कवियों के साहित्य पर कुछ कम अध्ययन हुआ है ।

व्याप्ति एवं सीमा :-

अनुसंधान की सीमा यह है कि, यहां श्री गुरु गोविंद सिंह जी के दरबारी कवियों के साहित्य में मानवता के दर्शन पर ही अध्ययन किया जाएगा । इसके अंतर्गत इन कवियों की काव्य रचनाओं का ही साहित्य आएगा । इस कार्य व्याप्ति में कवियों की रचनाओं में मानवता के दर्शन का दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जाएगा उल्लेखित बिंदूओ का ही इस अनुसंधान में अध्ययन किया जाएगा । दरबारी कवियों की संख्या बाव्वन है, और इनके ही साहित्य का अध्ययन प्रस्तुत अनुसंधान में करना है ।

अनुसंधान की पध्दतियां :-

- व्याख्यात्मक पद्धति
- विश्लेषणात्मक पद्धति
- विवेचनात्मक पद्धति
- आलोचनात्मक पद्धति
- मन्नात्मक पद्धति

अनुसंधान के अध्याय :-

इस अनुसंधान को मुख्य 6 अध्यायों में विभाजित किया गया है । अनुसंधान के अध्यायों में आवश्यकता अनुसार अनुसंधान कार्य करते समय इसमें परिवर्तन किया जा सकता है जो निम्नलिखित रूप से है ।

प्रथम अध्याय :-

मानवतावादी दर्शन : सामान्य परिचय :-

मानव सभ्यता और भारतीय जीवन विकास के लिए जिस प्रकार सिख गुरु साहिब ने ज्ञान तथा कर्म योग का संगम किया यह एक अद्‌भुत घटना है । आमतौर पर यह दोनों कार्य अलग है सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक देव जी (इसवी सन 1469-1539) जीवन के शुरुआत में ही यह अनुभव कर लिया था । इसीलिए ज्ञान शक्ति और कर्म शक्ति दोनों का सुमेल मानव जीवन में अति उपयोगी है । इस हालत में मानवीय समाज में विकास के लिए सूझबूझ का विकास जरूरी है इसके बिना मानवीय समाज की उन्नति नहीं हो सकती इसीलिए सिख गुरु साहिबों में विश्व भ्रमण करते हुए अनुभव भी संत, भक्त, कवियों आदि महापुरुषों के मानवता को दिए गए उपदेश संकलित किए । इस प्रकार से गुरु साहिबों का उद्‌देश्य साफ होता है कि मानवीय सभ्यता के फैले अज्ञान को मिटा के ज्ञान का प्रकाश सारे विश्व में किया जाए ।

सिख संप्रदाय के पहले गुरु नानक देव जी से लेकर उनके बाद 9 गुरु साहेबों की गुरु पद गरिमा तथा मानव कल्याण के कार्य को आगे बढ़ाया है । दसों गुरु साहिब ने संत, भगत, फकीरों की वाणी को संकलन करके श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की संपादना की । जिसकी वाणी का

उद्देश्य सर्वधर्म समभाव, उच्च – नीच, भेदभाव, नारी – पुरुष समानता तथा अनेक कुरीतियों का खंडन करना है । 10 गुरु साहिबान के इस कार्य में गुरु ने मानवतावादी कर्म के दर्शन होते हैं ।

द्वितीय अध्याय :-

श्री गुरु गोविंद सिंह जी के दरबारी कवि :-

गुरु गोविंद सिंह जी को अपने पिता गुरु तेग बहादुर (इसवी सन 1621-1675) से कवियों का दरबार विरासत में मिला था । हालांकि यहां उनकी अपनी दूर दृष्टि थी जिसने उन्हें दरबारी अखाड़े बनाने के लिए प्रेरित किया जहां उन्होंने दसवें गुरु के रूप में सेवा की । इसमें आनंदपुर और पांवटा साहिब के स्थान शामिल थे जबकि कुछ कार्य पंजाब और उसके आसपास किए गए थे । अन्य कार्य हजूर साहिब नांदेड़ महाराष्ट्रा में संपन्न किए गए थे । गुरु ने कवियों, लेखको,कलाकारों और संगीतकारों के लिए इन दरबारों में आने के लिए उचित परिस्थितिया बनाई । इनमें से कुछ कवि गुरु से मिलने आए और परिणाम स्वरुप अखाड़े में ही रह गए ।

1) **कवि भाई मणि सिंह दिवान :-**

कभी भाई मणि सिंह आप पवार राजपूत नायक भाई दास,मां माधुरी बाई की संतान थे आपका जन्म 24 जून ई सन 1734 को लाहौर (आज का पाकिस्तान) मैं हुआ आपके पिता शाहजहां बादशाह के दरबार में उच्च दर्जे के अधिकारी थे । आपका पहला नाम मनीराम था । आप 10 वे गुरु साहिब गुरु गोविंद सिंह के शिरोमणि दरबारी रतन कवि थे आपने अपने काव्य कौशल से 'भगत रतनावली' और

'ज्ञान रत्नावली' काव्य की रचना की इस से प्रभावित होकर गुरु गोविंद सिंह जी ने आपको अपने दरबार का दीवान पद बहाल किया ।

2) **भाई नंदलाल जी (गोया) :-**

भाई नंदलाल जी गुरु गोविंद सिंह जी के दरबारी कवियों में से आलम फजल और शिरोमणी कवि थे । आप द्वारा रचित कविताएं अरबी तथा फारसी भाषा के साहित्य में सर्वोत्तम मानी गई है । आपका जन्म इसवी सन 1663 मुल्तान (आज पाकिस्तान में) पिताश्री छज्जू राम के घर हुआ था । इस इसवी सन 1652 के बाद आप श्री गुरु गोविंद सिंह के दरबार श्री आनंदपुर साहिब में सम्मिलित किए गए ।

3) **कवि भाई चऊपा सिंघजी :-**

आपका जन्म ज़िला झेलम में हुआ आप ब्राह्मण समाज से संबंधित थे ।

4) **कवि भाई दया सिंह जी :-**

आप दरबारी कवियों में शिरोमणि रतन कवि थे। आपका जन्म लाहौर में हुआ था । आप गुरु गोविंद सिंह के दरबार के मुंशी पद पर स्थापित थे ।

5) **कवि पंडित कृपाराम जी :-**

आपका पूरा नाम कृपाराम दत्त ब्राह्मण था । आप कश्मीर के रहने वाले थे । आपके पिता का नाम अडूराम था । आप संस्कृत, ब्रजतथा भारतीय भाषा के विद्वान कवि थे ।

6) **कवि ननुआ बैरागी जी :-**

आपका जन्म वजीराबाद (लाहौर) में हुआ था । आप एक संपन्न घराने से आए हुए थे । आप गुरु गोविंद सिंह जी के दरबार में प्रेम गीत काव्य,सलोक तथा कोमल, शांत काव्य की रचना (बैरागी) विशेषण नाम लगाकर की, इसलिए आपका नाम कवि ननुवा बैरागी प्रसिद्ध हुआ ।

7) **कवि भाई राम कुंवर जी :-**

आपका जन्म सन 1672 को दिल्ली में हुआ। आपका जीवन फकीरी की तरह से रहा आप पंजाबी, ब्रज तथा संस्कृत भाषा के विद्वान ज्ञाता थे । आप गुरु गोविंद सिंह के दरबारी कवि थे आपका देहांत ई सन 1761 को हुआ ।

8) कवि पंडित देवराय जी :-

गुरु गोविंद सिंह जी के दरबारी कवियों में से आप शिरोमणि दरबारी कवि की उपाधि से सम्मानित थे, आप संस्कृत, ब्रज, फारसी भाषा के विद्वान थे आप बुंदेलखंड राजस्थान के रहने वाले थे ।

9) **कवि भाई लखन राय जी :-**

आपका धर्म राजपूत और पिता का नाम बिकचंद्र था । आपका जन्म उन शहरी हिमाचल प्रदेश में हुआ था । आप गुरु गोविंद सिंह जी के

दरबार में कलमी लेखक का कार्य भी करते रहे । आप पंजाबी फारसी ब्रजभाषा के विद्वान कवि थे ।

10) **कवि भोजराज जी :-**

आप कवि लखन राय के सगे बड़े भाई थे आपके बारे में सविस्तर जानकारी नहीं होने की वजह से हमें खेद है ।

11) **कवि तनसुख लाहोरी :-**

आप लाहौर पाकिस्तान के रहने वाले थे । आप गुरु गोविंद सिंह जी के दरबारी श्रृंगार कवि कहलाए, आपने राजनीति ग्रंथ की रचना की आप क्षत्रिय समाज से संबंधित थे ।

12) **कवि चंद्रसेन सेनापति :-**

आपका नाम चंद्रसेन तथा उपनाम सेनापति था । आप जाट परिवार में जन्मे आप हिंदी पंजाबी भाषा के महान विद्वान हुए । आपने संस्कृत भाषा के अनेक गद्य का अध्ययन किया । आपके विशेष काव्य प्रकार रचनात्मक गुण कारण गुरु गोविंद सिंह जी ने आपको सेनापति उपनाम बहाल किया । आपका जन्म तथा मृत्यु समय काल के बारे में कोई जानकारी प्राप्त नहीं है ।

13) **कवि काशीराम जी :-**

आपका जन्म इसवी सन 1658 में सक्सेना कायस्त परिवार शहर बनारस में हुआ था । जब गुरु गोविंद सिंह जी ने आनंदपुर साहिब

दरबार की स्थापना की, उस समय आप भी उसे दरबार में हाजिर थे आप संस्कृत, हिंदी तथा पंजाबी भाषा के विद्वान कवि थे ।

14) कवि प्रहलाद राय जी :-

आप दरबारी रत्नों में से एक धुरंधर कवि थे, आपने संस्कृत भाषा के उपनिषदों के ग्रंथों का पंजाबी भाषा में अनुवाद किया । आप गुरु गोविंद सिंह जी के साथ ई सन 1689 में शहर पाऊंटा साहीब हिमाचल प्रदेश के दरबार में कवि थे तथा आप वहां से भी श्री आनंदपुर साहिब आए । आप फारसी भाषा के विद्वान ज्ञानी थे । आपके जन्म तथा मृत्यु काल का कोई प्रमाण प्राप्त नहीं है ।

14) कवि अमित राय लाहोरी :-

आप लाहौर पाकिस्तान के रहने वाले थे, आप भट जाती से संबंधित थे, आपके पिता श्री छैलराम थे, आपने 'संस्कृत भागवत एकादस स्कंद पुराण' का अनुवाद हिंदी और पंजाबी भाषा में किया ।

16) कवि मंगल राय जी :-

आप सियालकोट पाकिस्तान में जन्मे, अपने गुरु गोविंद सिंह जी के दरबारी कवि होने की प्रशंसा से बहुत धन दौलत इनाम में प्राप्त की, इससे खुश होकर अपने गुरु गोविंद सिंह जी की महिमा मंडन सभी और किया ।

17) कवि हंसराज वाजपेई जी :-

आप फतेहपुर यूपी में रहने वाले धड़ल्लेदार कवि हुए है । आपने ब्रज हिंदी तथा फारसी भाषा की अनेक काव्य रचना की । गुरु गोविंद सिंह जी से 60 हजार रुपया इनाम प्राप्त किए है, आप पर खुश होकर गुरुजी ने आपको घोड़ा, हाथी और अनेक स्वर्ण आभूषणों से नवाजा ।

17) **कवि कुंवरेश जी :-**

आप हिंदी के प्रसिद्ध कवि केशवदास के सुपुत्र थे । आपको गुरु गोविंद सिंह जी ने रुपये 5 रोजाना तनखा पर अपने दरबार में रखा । आपका जन्म बाबरी नगर यूपी में हुआ था ।

19) **कवि टहेकन दास जी :-**

आपका जन्म जलालपुर गुजरात पाकिस्तान में चोपड़ा वंश में हुआ । आपके पिता रंगील दास थे । श्री गुरु गोविंद सिंह जी ने संस्कृत में उपलब्ध महान अनुवाद सरल भाषा में करने का कार्य आपको सौपा । आप दरबारी कवियों के शिरोमणी कवि कहलाए ।

20) **कवि चाँद जी :-**

आप स्वर्णकार समाज से संबंधित थे । आपकी रचना त्रिया चरित्र मशहूर है जिसमें 50 कहानीयाँ अनेक समकालीन भाषा में रचित की गई है ।

21) **कवि अनिराय जी :-**

आप कवि दरबारीयों में बीर रस की रचना करने वाले विद्वान कवि थे । आपने जंग नामा गुरु गोविंद सिंह जी आनंदपुर साहिब दरबार में बैठकर रचा । आप गुरु साहिब के पुराने कवि माने गए हैं । अपने आपसे प्रसन्न होकर गुरु साहब ने आपको हीरे रतन जडीत स्वर्णिम आभुषण प्रदान किए ।

22) **कवि सुखदेव जी :-**

आप दौलतपुर रायबरेली यूपी के रहने वाले थे । आप कुबज ब्राह्मण समाज से थे । आप गुरु साहिब के दरबारी कवि हुए हैं । आप छंद, अलंकार, नायक, नायिका भेद के विद्वान कवि थे ।

23) **कवि ब्रिंद जी :-**

आप समकालीन मुगल दरबार के कवि थे । आपको गुरु गोविंद सिंह जी से प्रेरणा प्राप्त हुई । आजाद और सम्मान वाला वातावरण देखकर आप आनंदपुर के दरबार में शामिल हो गए । आपका जन्म इसवी सन 1643 में मेड़ता गांव जोधपुर राजस्थान में ब्राह्मण परिवार में हुआ । आपके काव्य रचना 'भाव पंचासिका' बहूत प्रसिद्ध है ।

24) **कवि गिरधारी लाल जी :-**

आपका जन्म मुल्तान पाकिस्तान में हुआ आप क्षत्रिय समाज के थे आप छंद शास्त्र के विद्वान कवि थे ।

25) **कवि आलम जी :-**

आपके जन्म के बारे में कोई जानकारी नहीं है । आप इश्क हकीकी से प्रेरित होकर अपने नाम के साथ शाह पदवी लगा ली । आप एक बेपरवाह सूफी फकीर थे, आपकी मृत्यु इसवी सन 1713 में हुई ।

26) **कवि नंदराम :-**

आप सूफी संत कवि बलिराम के पुत्र थे । आप खंडेलवाल वैश्य जाति के थे आप फारसी रेखता हिंदी पंजाबी ऐसे कई भाषाओं में काव्य रचना की आपने गुरु गोविंद सिंह जी पर एक काव्यरचना 'कड़खा गुरु गोविंद सिंह' की रचना की थी ।

27) **कवि हरिदास :-**

आप दरबारी रतन थे । आपने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हस्तलिखित प्रति को तैयार करने में अहम भूमिका निभाई है । आपने 1693 इसवी सन में 'प्रेम अबोधि' काव्य की रचना की है आप एक अद्भुत साहित्य रचनाकार थे ।

28) **कवि गोपाल जी :-**

आपका जन्म गोकुल में हुआ आप गुरु साहिब के समकालीन कवि थे । अब दरबारी रतन कवि थे ।

29) **कवि धर्म सिंह :-**

आप भटाना कुल के जमींदार परिवार से संबंधित मुजफ्फरपुर यू.पी. के रहने वाले थे आपकी काव्य रचना 'गुरु विलास पातशाही छेवि प्रसिद्ध' है ।

30) कवि गुरदास सिंघ जी :-

आप पहले दरबारी कवि थे जिन्होंने गुरु गोविंद सिंह जी को अपने आंखों से प्रत्यक्ष युद्ध करते हुए रण में देखा आप चौहान जाति के राजपूत थे आपके पिता का नाम भाई दुर्गा जी था । आपका जन्म गुजरांवाला पाकिस्तान में हुआ ।

31) कवि गुरदास गुणी जी :-

आप हिंदी भाषा के विद्वान कवि थे । आपकी काव्य रचना 'कथा हीर रांझे की' मशहूर है आपने एक और काव्य रचना 'साखी हिराघाट दख्खन की' रचना की है ।

32) कवि फेरुजी :-

आप उदासी साधु समाज के थे आपका जन्म उपल क्षत्रिय परिवार में सन 1634 को पंजाब में हुआ । आपने वैराग और ज्ञान के काव्य की रचना की । आपकी मृत्यु सन 1706 को हुई ।

33) कवि ब्रहम भट्ट जी :-

आपके बारे में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है ।

34) कवि हीर भट्ट जी :-

आप एक तडफदार कवि थे । इसके अलावा आपके बारे में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है ।

35) कवि सुंदर जी :-

आपका जन्म ग्वालियर एमपी में हुआ था आपका परिवार जाति से ब्राह्मण था आपकी काव्य रचना 'सुंदर श्रृंगार' काफी प्रचलित हुई आप पंजाबी ब्रज भाषा के विद्वान कवि थे । आप गुरु दरबार के हजूरी कवि या शिरोमणी कवि स्थापित किए गए।

36) **कवि शारदा जी :-**

आपके बारे में ज्यादा जानकारी उपलब्ध नहीं है ।

37) **कवि सुदामा जी :-**

आप एक बहुत गरीब परिवार से थे । आप 'छंद - बंद' काव्य रचना के विद्वान थे । आपको गुरु साहब ने गरीब सुदामा उपाधि प्रदान की थी ।

38) **कवि हुसैन अली जी :-**

आप गुरु दरबार के दरबारी कवि थे । आपके बारे में ज्यादा जानकारी प्राप्त नहीं है ।

39) **कवि चंदन जी :-**

आप गुरु साहब के दरबारी कवि थे । आपके बारे में ज्यादा जानकारी प्राप्त नहीं है ।

40) **कवि धन्ना सिंह जी :-**

आप गुरु साहिब के समकालीन कवि थे । आप पंजाबी पारसी तथा ब्रजभाषा के विद्वान कवि थे । आप कठिन से कठिन काव्य रचना को सामान्य रचना में परिवर्तित करने में माहीर माने जाते थे ।

41) **कवि रामदास जी :-**

आपका नाम दरबारी कवियों में हजूरिया उपनाम से प्रसिद्ध था । आप गुरु गोविंद सिंह जी की साथ में इसवी सन 1708 में यात्रा करते हुए पंजाब से नांदेड महाराष्ट्र आए ।

42) **कवि बृजलाल जी :-**

आपका जन्म पंडित परिवार में हुआ था । आप संस्कृत भाषा के विद्वान कवि थे ।

43) **कवि मीर छबीला :-**

आप एक कवि के अलावा एक कलाकार भी थे । आप संगीत कला में माहिर तथा युद्ध कला में पारंगत थे । आपने कई युद्धों के बारे में वीर रस की काव्य रचना की है ।

44) **कवि मीर मुश्की :-**

आप कवि मीर छबीला के सहयोगी कवि थे ।

45) **कवि केशव सिंह भट्ट :-**

आप राजपूत वंश में, पिता बोहोड जी के घर जन्म लिए आप गुरु दरबार के भट्ट कवि कहलाए । आपके काव्य रचना का प्रकार 'सवैया' विशेष था ।

46) **कवि देशा सिंह भट्ट :-**

आप कवि केशव सिंह भट के भाई थे । अपने गुरु गोविंद सिंह जी के सम्मान में अनेक सवैया की काव्य रचना की । आप गुरु गोविंद सिंह साहब के शिरोमणि दरबारी कवि थे ।

47) **कवि नरबद सिंह भट्ट :-**

आप कवि केशव सिंह भट्ट के पुत्र थे । आपने युद्ध कला के लिए वीर रस से पूर्ण काव्य रचना की ।

48) कवि कीरत सिंह :-

आप गुरु दरबार की प्रथम कवि बने । जिन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहब के प्रर्याय (शब्द भेद) की रचना की । आप गुरु साहिब के हुकुम से अमृतसर पंजाब जाकर सिख धर्म के प्रचारक बने ।

49) कवि निहचल फकीर जी :-

आप संत स्वभाव वाले पंजाबी भाषा के विद्वान कवि थे । आपके बारे में ज्यादा जानकारी उपलब्ध नहीं है ।

50) कवि पिंडी लाल जी :-

आपका जन्म ब्राह्मण जाति में हुआ । आपने 'श्री जपुजी साहिब' वाणी का भावार्थ हिंदी भाषा में किया आप गुरु साहिब के दरबारी कवि थे ।

51) कवि नंदलाल जी :-

आप कवि पिंडीलाल जी के भाई थे । आप फारसी भाषा के विद्वान कवि थे ।

52) कवि मल्लु जी :-

आपका जन्म लाहौर पाकिस्तान में हुआ था । आप हिंदी भाषा के विद्वान कवि थे आप 'कवित' प्रकार की काव्य रचना में माहिर माने गए हैं ।

<u>तृतीय अध्याय</u> :-

शिरोमणि दरबारी कवियों के साहित्य में मानवतावादी दर्शन :-

गुरु गोबिंदसिंघजी के समय काल में (इसवी सन 1699) के आसपास हिंदूस्थान में जाती वर्ण परंपरा रुढीवादी थी । सभी जातीयों को अनेक वर्णों में विभाजित किया गया था । जो कर्म क्षत्रिय जाती कर सकते है । वह कर्म ब्राम्हण वर्ण न कर सकता था । वैश्य और शुद्र वर्ण तो क्षत्रिय और ब्राम्हण से बहूत निचले तबके वर्ण माने गए है । गुरु गोबिंदसिंघजी ने सभी जाती वर्ण को एकत्र करके के अमृतपान कराया । जिस तरहा सभी वर्णो को वीररस से भरपुर किया । वही गुरु साहीब ने साहित्यीक, कला, संगीत के कलाकारों को प्रेरीत कर कलम की ताखत का एहसास कराया था । गुरु साहीब के शिरोमणी दरबारी कवियों के साहित्य में विभीन्न जाती वर्नों के कवि – विद्वान सहभागी किए गए । जिन्होने 'मानस की जात सभै एके पहचानबो' का मंत्र समुह मानवता को दिया । जिस से कवियों की साहित्य में उच – निच जाती वर्नो का संभ्रम दूर कर मानवतावादी दर्शन प्राप्त होते है ।

चतुर्थ - अध्याय :-

अन्य दरबारी कवियों के साहित्य में मानवतावादी दर्शन :-

गुरु गोबिंदसिंहजी के दरबारी कवियों में अन्य कवियों की काव्य रचना मानवतावादी हितों को दर्शाने वाली है । जैसे कवि आलम जी, जो की एक सुफी पंथ के अनुयायी थे । सुफीवाद काव्य रचना में उन्होने मानवी जीवन से संबंधित अनेक सदगुनों को प्रेरीत किया । कवि चाँद जी द्वारा रचित

काव्य रचना में 'त्रियाचरित्र' की 50 कहॉनियाँ अनेक समकाली भाषा में लिखी गई है । यह कहानियाँ मानवी चरित्र को उत्कृष्ट तथा चरित्रवान बनाने के लिए मार्गदर्शक है । अन्य दरबारी कवियों के छंद - बंद की रचना तथा सवईये, चौपाई, सलोक आदी सामील है । अत: अन्य दरबारी कवियों के काव्यरचना में / साहित्य में भी मानवतावादी दर्शन विशेष व अंशत: रुप में प्राप्त होते है ।

पंचम अध्याय :-

भाषा की दृष्टि से दरबारी कवियों का अध्ययन :-

गुरु साहब के 52 दरबारी कवियों में समकालीन भाषाओं में अनेक काव्य रचना, छंद बंद, कहानी, गजल आसावारीयाँ, शब्द रचना, सोरठा, दोहरा, चौपाई तथा संगीत के अनेक रागो में अपने काव्य की रचना की । समकालीन प्रभावी भाषा का मान फारसी को प्राप्त था । इसके अलावा ब्रजभाषा, संस्कृत भाषा, तथा हिंदी भाषा सभी जाती धरर्मो में प्रचलित थी । गुरु साहिब ने अपने दरबारी कवियों द्वारा रचित काव्य रचना में अनेक भाषाओं का प्रयोग करवाया । जिस कारण समकालीन तथा भविष्य में सभी सामाजिक जन इसका उपयोग कर, अनेक भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कर सके ।

षष्टम अध्याय :-

उपसंहार एवं निष्कर्ष :-

गुरु गोविंद सिंह जी के 52 दरबारी कवियों में मौजूद 'शिरोमणि' दरबारी कवियों मैं मानवतावादी काव्य रचना का विस्तार जादा प्रखर दिखाई

देता है । इसकी तुलना में अन्य कवियों द्वारा रचित काव्य रचना में समकालीन परंपरा और गुरु साहिब के व्यक्तिगत महत्व को दर्शाने वाले काव्य उभर के आते हैं ।

संदर्भ सूची :-

1.	भाई नंदलाल ग्रंथावली	डॉ.गंडा सिंघ
2.	पंजाबी साहित्य का विकास	भाषा विभाग पंजाब
3.	प्राचिन जंगनामे	समशेरसिंघ 'अशोक'
4.	अमरनामा	ग्यानी गुरुदित्त सिंघ
5.	हिंदी भाषा तथा साहित्य का विकास	पंडित अयोध्या सिंह उपाध्याय

शोधनिर्देशक
डॉ.भगवान नारायण जाधव
प्रोफेसर
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग एवं अनुसंधान केंद्र
पीपल्स कॉलेज, नांदेड

शोधछात्रा
रीनाकौर सुजानसिंघ कामठेकर
नांदेड